दादा भगवान परिवार का

अगस्त २०१८

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

Happy Birthday to you

नम्र व्यक्ति सभी को प्रिय

संपादकीय

बालमित्रों,

जो झुकता है वह सभी को अच्छा लगता है - हम बचपन से ही यह कहावत सुनते आए हैं। घर में मम्मी, स्कूल में टीचर और स्टॉरी टाईम के समय दादा-दादी ने भी यही बात बताई है। कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है कि यदि सभी का काम करेंगे, सभी की बात मानेंगे तो सभी को अच्छे लगेंगे या फिर यदि नम्र बन जाएँगे तो अच्छे लगेंगे?

तो आईए, यह बात हम इस अंक में विस्तार से समझते हैं ताकि हम भी ऐसे बन सकें और सभी को अच्छे लगें।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ६ अंक: ५
अखंड क्रमांक: ६५
अगस्त - २०१८
....

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजो।

प्रश्नकर्ता : अकड़ की स्थिति आने पर जो नम्र हो जाता है उसे खानदानी कहते हैं। जैसे-जैसे नम्रता बढ़ती है वैसे-वैसे खानदानी ऊपर आती है। इसे ज़रा समझाइए न!

पूज्यश्री : यह पेड़ हैं न! जब उस पर फल आते हैं तब नीचे झुकता है या टाईट हो जाता है? नीचे झुकता है। जब आम के पेड़ पर आम आने लगते हैं तब वज़न से डालियाँ नीचे झुकने लगती हैं। वैसे ही जैसे-जैसे बड़े बनते जाते हैं वैसे-वैसे नम्रता का गुण उत्पन्न होने लगता हैं। ये महान पुरुष, जो प्रेसिडेन्ट, प्राईम मिनिस्टर बनते हैं, वे सभी बहुत नम्र होते हैं। बिल्कुल बच्चे जैसे।

इसलिए कुदरत का नियम है कि जैसे-जैसे नम्रता बढ़ती है वैसे-वैसे उच्च स्थिति प्राप्त होती है। जैसे-जैसे अकड़ बढ़ती है वैसे-वैसे हीनता आती जाती है।

रेलवे स्टेशन पर मज़दूर होते हैं न! यदि उनसे कहें कि भाई, यह सामान उठाने के क्या २५ रुपए होते होंगे? २० रुपए होंगे, तो वह ऐसा कहकर अकुला जाता है कि पूरे पैसे नहीं देते और धड़ाम से सामान फेंक देता है। जब व्यक्ति बड़ा बन जाता है तब नम्रता बढ़ती जाती है, विनय बढ़ता जाता है अतः अहंकार का तूफ़ान नहीं होता। अधिकार, सत्ता सब होती है लेकिन उसका रौब नहीं जमाते। उनके अंदर न्यूनता का भाव रहता है कि जब कोई नम्रता से भरा हुआ होगा तभी वह गुणवान कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यदि हमें अपने अंदर यह नम्रता का गुण लाना है तो उसके लिए कौन सी समझ सेट करनी होगी?

पूज्यश्री : यह तो आसान रास्ता है। जब कोई ऐसे आड़ाई करता है और हम देखें तो उस समय हमें उसकी भूल नहीं देखनी चाहिए या अकुलाना नहीं चाहिए कि यह इंसान कैसा है। छोटा सा काम करता है फिर भी आड़ाई करता है। यह इंसान ही यूज़लेस है। ऐसे दोष नहीं देखने चाहिए।

बल्कि यह सोचना चाहिए कि ओह! यदि वह ऐसा करता है तो हमें अच्छा नहीं लगता। जब हमारे साथ ऐसा होता है तो क्या हम भी ऐसा ही करते हैं? उसे चैक करना है। हम भी किसी जगह पर ऐसा ही किया करते होंगे। ऐसा हमें अपने अंदर देखना चाहिए और उसके लिए पश्चाताप करना चाहिए तब हमारी भूल खत्म होगी।

और यदि कोई सरल है, कोई नम्र है, लघुता दिखाता है तो हमें ऐसा लगता है कि कितने अच्छे गुण हैं। यदि उन अच्छे गुणों को एप्रीशिएट करेंगे तो हमारे अंदर भी वे गुण प्रकट हो जाएँगे।

यह तो नई ही बात है !

सोने को जैसा मोड़ते हैं वैसा मुड़ जाता है और काँच को मोड़ते ही उसके टुकड़े हो जाते हैं। सोने को चाहे जितना खींचकर लंबा करे फिर भी टूटता नहीं हैं। वैसे ही जब नम्रता बढ़ती जाती है तो व्यक्ति टूटता नहीं है। उसका अपमान करो, नुकसान करो, फिर भी वह अकुला नहीं जाता। यदि उसे छेड़ेंगे तो वह अकड़ नहीं जाएगा। उसे खानदानी कहते हैं। अर्थात् उसे संस्कारी कहा जाता है।

सभी छोटे बच्चे का ध्यान रखते हैं या बड़ों का? यदि छोटा बच्चा खो जाता है तो सभी उसे बिस्किट देते हैं, दूध देते हैं, प्रेम से पुचकारते हैं और उसे उसकी मम्मी के पास पहुँचा देते हैं। वैसे ही जो छोटे बनकर रहते हैं उन्हें सभी सँभाल लेते हैं।

अकुलाना तो बहुत बड़ा रोग है। साँप को भी बिल में यदि घुसना है तो उसे सीधा होना पड़ता है। वैसे ही यदि हमें मोक्ष में जाना है तो सरल होना पड़ेगा, नम्र होना पड़ेगा।

यदि बच्चे जैसी अवस्था होगी तो हम झुक पाएँगे। बहुत बड़प्पन का क्या करना है? यदि छोटा बन जाएगा तो वह बहुत बड़ा, भगवान बन जाएगा।

यदि ऊँचे कुल का होने का अहंकार करता है तो नीचे कुल में जन्म होता है और यदि कोई नीचा कुल वाला होता है और उसमें नम्रता होती है तो ऊँचे कुल में जाता है।

खरी कदर

रहीम चाचा की दुकान पर जाकर कवन ने अकड़कर पूछा कि "मेरे कपड़े सिल गए क्या?"

माफ करना, बेटा जी। अभी नहीं हुए है। शाम तक हो जाएँगे। हर बार की तरह रहीम चाचा की आवाज़ में नम्रता और मिठास थी।

कवन की कमान छटक गई। लेकिन उसमें कहाँ कोई आश्चर्य की बात थी? जब उसकी मनमानी नहीं होती तब उसका दिमाग़ बिगड़ने में देर नहीं लगती। बड़ों की उम्र का आदर करने के लिए, नम्रतापूर्वक बोलने के लिए, मम्मी ने उसे कई बार टोका था। लेकिन वह बात उसके दिल में नहीं उतरती थी। "नम्रता" शब्द तो उसकी डिक्शनेरी में फिट ही नहीं होता था।

"आई डोंट अन्डरस्टैन्ड कि मम्मी आप से ही कपड़े सिलवाने का आग्रह क्यों करती हैं? यू हेव नो टाईम एथिक्स। लेकिन आपको यह बात समझने की क्या ज़रूरत है। लेकिन आप कहाँ मेरी बात समझ पाओगे शाम को आऊँगा, कपड़े तैयार रखना।" कवन ने ऊँची आवाज़ से कहा और मुँह बिगाड़कर दुकान के बाहर चला गया।

घड़ी में देखा तो दस बज गए थे, "ओह नो, आई होप कि मुझे फिल्ड ट्रिप के लिए देर न हो जाए।" उस दिन पलक दीदी, संस्कार सिंचन कैम्प के बच्चों को सूरजगढ़ मंदिर के फिल्ड ट्रिप के लिए ले जाने वाली थीं।

वैसे तो कवन को, "संस्कार सिंचन" के नाम से ही एलर्जी थी लेकिन मम्मी-पापा के आग्रह की वज़ह से वह इस कैम्प में शामिल हुआ था। कैम्प में शामिल होने के बाद, उसे पलक दीदी के साथ चित्र-विचित्र कहानियाँ सुनने और नई-नई गेम्स् खेलने का मज़ा आया था। कैम्प में नए दोस्त भी बन गए थे।

जब तक कवन निर्धारित स्थल पर पहुँचा तब तक सभी बच्चे बस में बैठ चुके थे। कवन का ही इंतज़ार हो रहा था। एक पल के लिए कवन को लगा कि पलक दीदी उसे देर होने के लिए टोकेंगी। लेकिन पलक दीदी तो प्रेम का भंडार थीं। उन्होंने प्रेम से कवन के गाल पर हाथ रखकर कहा, "आ गया लिटिल चेम्प! चल बैठ जा।" बस चली और गेम्स् शुरू हुई। मौज़-मस्ती करते-करते कब सूरजगढ़ आ गया किसी को उसका पता ही नहीं चला।

भोजन का समय हो गया था। मंदिर के ही भोजनालय में खाने की व्यवस्था की गई थी। भोजनालय में बड़े-बड़े अक्षरों में बोर्ड पर लिखा था, "खाने के बाद थाली धोकर रखे। खाना वेस्ट न करें।"

"यह क्या? हमें खुद ही थाली धोनी है? ऐसी कैसी जगह है? इससे तो होटल में खाने

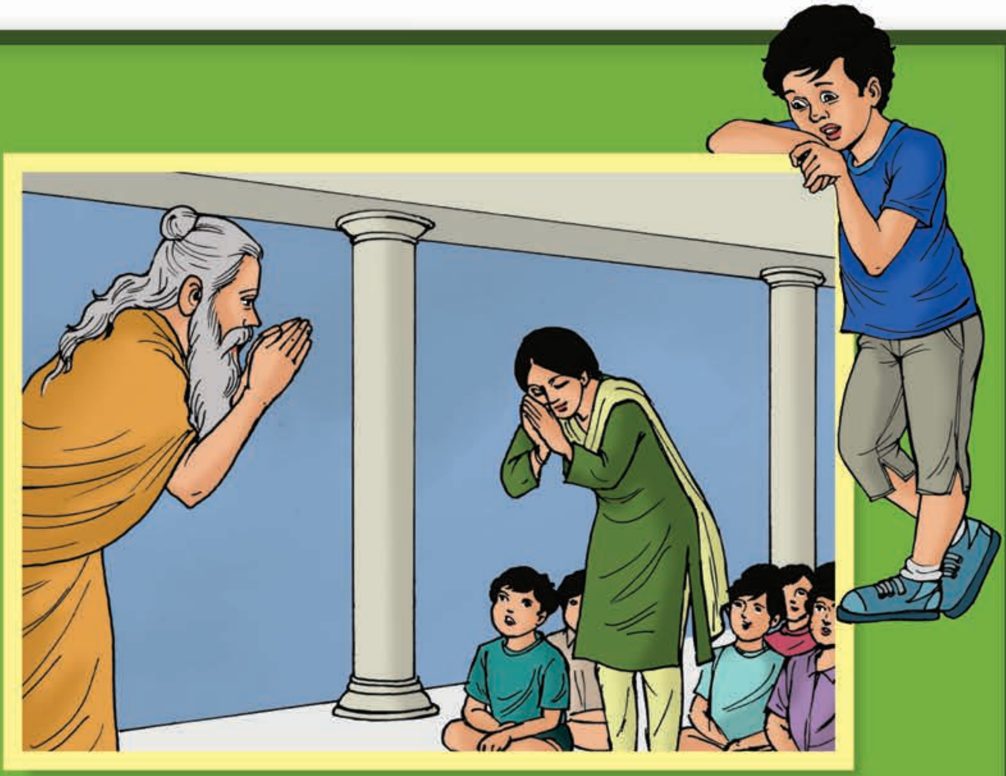

जाए वह अच्छा।" कवन का दिमाग़ खराब हो गया।

खाने के टेबल पर, कवन का मुँह देखकर, पलक दीदी ने कहा, "अरे कवन, नाराज क्यों होते हो, माय फ्रैन्ड। यदि तुम इस जगह का पॉज़िटिव देखोगे, तो तुम्हारी सारी नाराजगी दूर हो जाएगी। देखो तो सही, सभी कितने प्रेम से परोस रहे हैं। खाने की थाली की कीमत बिल्कुल नहीं के बराबर है। यहाँ सभी अपना समय खर्च करके सिर्फ सेवा देते हैं।" और फिर थोड़ी गंभीरता से कहा, "जिस जगह पर होते हैं हमें उस जगह के नियमों का पालन करना चाहिए।"

सभी बच्चे अपनी-अपनी थाली धो रहे थे, तभी मंदिर के पुजारी पलक दीदी से मिलने आए। पलक दीदी ने दोनों हाथ जोड़कर पुजारी जी को नमस्कार किया। कवन दूर से पलक दीदी और पुजारी जी को वार्तालाप करते हुए देख रहा था। उसके मन में प्रश्न उठा, "पलक दीदी इतनी नम्र कैसे रहती हैं?"

"पुजारी जी खास तौर से, हमें संत श्री के दर्शन के लिए निमंत्रण देने के लिए आए थे। पलक दीदी ने सभी बच्चों से कहा कि "मंदिर में दर्शन करके, हम संत श्री के दर्शन करेंगे। " इन संत श्री की निश्रा में ही मंदिर का पूरा संचालन हो रहा है।"

कवन को यह बात ठीक नहीं लगी, "लेकिन, क्या ज़रूरत है दीदी? मेरा मतलब यह है कि संत के दर्शन करने की क्या ज़रूरत है? मुझे वैसे भी किसी के भी सामने जाकर झुकना अच्छा नहीं लगता।"

"कवन जब हम सामने वाले के पॉज़िटिव देखेंगे, उनके गुणों को एप्रीशिएट करेंगे, तब हमें नम्रता का दिखावा नहीं करना पड़ेगा। हमारा शीश, हमारा अहंकार, अपने आप ही उनके सामने झुक जाएगा," दीदी ने कवन को समझाने की कोशिश की। और फिर बातचीत को हल्का बनाते हुए बोलीं, "मेरी बात सुनकर कोई यहीं सोने न लग जाए उससे पहले हम मंदिर जाकर दर्शन करके आते हैं।"

दर्शन के बाद, मंदिर के एक कोने में बच्चे पलक दीदी के आस-पास खड़े हो गए। तभी संत श्री मंदिर में पधारे। मंदिर में उपस्थित दर्शनार्थी संत श्री के चरणस्पर्श करने के लिए दौड़ने लगे। सभी को आशीर्वाद देकर, संत श्री पलक दीदी के पास आए।

संत श्री ने पलक दीदी को नमस्कार किया और कहा, "हमारे अहोभाग्य कि आप यहाँ पधारे। आपकी संस्था की सुगंध तो चारों ओर फैली हुई है। आप सभी की सेवा और साधना धन्य है।"

पलक दीदी ने संत श्री का अभिवादन करते हुए कहा, "इस क्षेत्र में आकर हमने बहुत धन्यता का अनुभव किया।"

यह दृश्य देखकर कवन की आँखे फैल गई। "जिन संत के सामने हज़ारों लोग झुकते हैं, वे कितनी सरलता से पलक दीदी के सामने झुक गए। कितनी ग़ज़ब की स्थिति कही जाएगी।" पलक दीदी के कहे हुए शब्द कवन की दृष्टि में आए। कवन दिल से संत श्री के सामने झुक गया और उनके आशीर्वाद लिए।

घर वापस लौटते समय, कवन सारे रास्ते संत श्री की निर्मल आँखें, उनकी सरलता और उनकी मीठी वाणी कि रमणता में ही रहा।

वह अपनी ही धून में घर की तरफ जा रहा था, तभी रहीम चाचा की आवाज़ सुनाई दी, "अरे बाबा साहेब, कहाँ जा रहे हो? आपके कपड़े तैयार हैं।"

कवन दुकान की तरफ मुड़ा।

"बैठिए बेटा जी। अभी ले आता हूँ," कहकर, रहीम चाचा अंदर के कमरे में कवन के सिले हुए कपड़े लेने गए।

कवन की आँखों के सामने रहीम चाचा के साथ की घटनाएँ याद आने लगीं। कभी पार्टी के ड्रेसिस तो कभी यूनिफॉर्म। पूरी ज़िंदगी समय की परवाह किए बिना रहीम चाचा ने प्रेम से कवन के परिवार के लिए कपड़े सिले थे।

"रहीम चाचा के गुणों को मैंने कभी एप्रीशिएट नहीं किया और जब आज बुढ़ापे की वजह से उनका काम थोड़ा धीमा हो गया है तो मुझे चिढ़ने में ज़रा भी देर नहीं लगी?" सुबह की घटना याद करके कवन की आँखें भर आईं।

रहीम चाचा ने कपड़े अच्छी तरह तह करके एक थैली में डालकर, कवन के हाथ में दिए, "लीजिए, बेटाजी।"

आज पहली बार कवन को रहीम चाचा के गुणों की कदर हुई थी।

"शुक्रिया रहीम चाचा," कहकर, कवन का सिर रहीम चाचा के सामने आदर सहित झुक गया।

सफलता का श्रेय

हैलो, माय सेल्फ, भट्टी। भट्टी एन्ड सन्स का मालिक।
कॉन्फरन्स हॉल के कौने में बैठे हुए एक व्यक्ति के पास जाकर, मि. भट्टी ने अपना परिचय दिया।
उस व्यक्ति को अपना परिचय देने का मौका ही नहीं मिला, क्योंकि भट्टी साहब नॉन-स्टॉप अपनी ही प्रशंसा में लगे रहे।
तभी होस्ट ने स्टेज पर आकर, फंक्शन की शुरुआत की।
गुड ईवनिंग एवरीवन! आप सभी का बहुत, बहुत स्वागत है।
एन्ड इटस् ए स्पेशियल ओनर टु हेव मि. अंकित जैन विथ अस टुडे। प्लीज़ वेलकम मि. जैन ओन स्टेज।
एक्सक्यूज मी, मि. भट्टी। आई हेव टु गो।
इतने बड़े व्यक्ति के पास आकर अपनी प्रशंसा करने के लिए मि. भट्टी को बहुत शर्मिंदगी हुई।
वैलकम सर। एवार्ड सेरेमनी शुरू करें उससे पहले क्या आप ऑडियन्स के साथ कुछ शेयर करना चाहेंगे?

ज़रूर। इस अवसर पर मुझे, चार्ल्स प्लंब की बात याद आती है। कोई जानता है चार्ल्स प्लंब को?
ओडियन्स में से कोई रिस्पोन्स नहीं था।
वेल, चार्ल्स प्लंब यू. एस. नेवी में जेट पायलट थे। वियतनाम वॉर के समय, एक मिसाइल ने उनके विमान पर हमला किया था।
प्लंब, पैराशूट से विमान के बाहर निकले और आकस्मिक मृत्यु से बच गए।
सालों के बाद, जब प्लंब अपनी पत्नी के साथ रेस्टोरेन्ट में बैठे थे तब,
आप चार्ल्स प्लंब हो न? वियतनाम में आपके जेट फाईटर विमान पर हमला हुआ था न?

चार्ल्स प्लंब बहुत आश्चर्य हुआ।
हाँ... लेकिन... आपको कैसे पता है?
सर, मैंने ही आपका पैराशूट पैक किया था। आई गेस, टि वर्कड्।
ईट श्योर डीड यदि पैराशूट नहीं होता तो आज मैं जीवित नहीं होता।
उस रात, चार्ल्स प्लंब को बिल्कुल भी नींद नहीं आई।
कितनी बार मैं उस व्यक्ति के पास से निकला होंगा लेकिन अपने आप को "बड़ा" फाईटर पायलट समझकर मैंने उस सेलर की अवहेलना की होगी।
मैं अपने ही अहंकार के गुमान में अपने आप को पता नहीं क्या समझता रहा? कभी भी दो पल रुककर कभी किसी के हालचाल पूछे?
उस दिन चार्ल्स प्लंब को एहसास हुआ कि जिन लोगों को सामने वे अहंकार का गुमान लेकर घूमते थे, उनमें से ही एक व्यक्ति ने उनकी जान बचाई थी।
चार्ल्स प्लंब की बात पढ़कर, मुझे भी एहसास हुआ कि कई लोगों कि मदद से किसी भी काम में सफलता मिलती है।

जब सभी का रोल समझ में आया, तब अपना रोल बहुत छोटा लगा और मेरा अहंकार पिघल गया।
तालियों की गड़गड़ाहट के साथ, ऑडिअन्स ने अंकित जैन की बात का अभिवादन किया।
और अब, अंकित भाई, मिस्टर भट्टी को "बिज़नेसमैन ऑफ द ईयर" के एवार्ड से सम्मानित करेंगे।
पहली बार, मि. भट्टी की चाल में अभिमान नहीं, बल्कि नम्रता थी।
ऐसा कहते हैं कि जब पेड़ पर फल आते हैं तब वह झुक जाता है। आज मि. अंकित ने यह कहावत समझा दी।
अनेकों पैराशूटों की मदद से, तकलीफों की मिसाइलों की सामने, आज भट्टी एन्ड सन्स कम्पनी, सफलता के शिखर पर पहुँची है। इस एवार्ड का श्रेय खुद न लेकर बल्कि कम्पनी के हर एक सदस्यों को जाता है।
अपने आप को निम्न मानकर कम्पनी के सभी सदस्यों को सफलता का श्रेय देते हुए मि. भट्टी ने एक अनोखे हल्केपन का अनुभव किया।

चलो खेले...

CROSS WORD

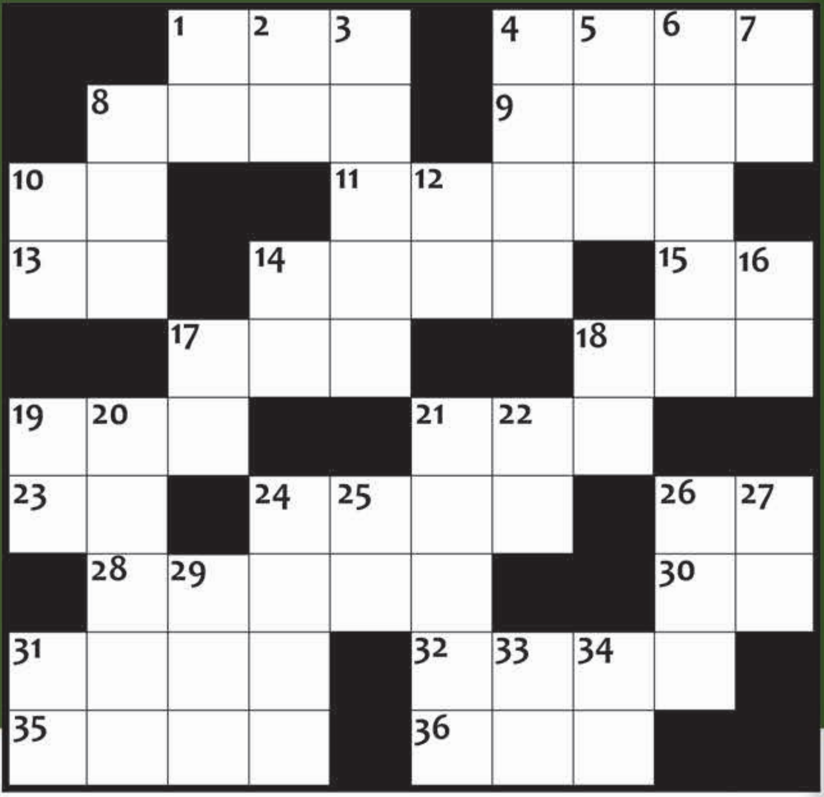

ACROSS

1. 1408 - 427
4. 1627 + 6068
8. 601 + 3466
9. 6046 – 2918
10. 9 +18
11. 84863 -2084
13. 24 + 21
14. 2109 + 7810
15. 58 – 4
17. 420 – 105
18. 40 + 946
19. 219 + 501
21. 499 – 15
23. 2 + 37
24. 401 + 2294
26. 28 + 53
28. 23833 – 11720
30. 62 – 5
31. 328 + 1133
32. 10074 – 261
35. 2826 + 3220
36. 142 + 442

DOWN

1. 172 – 82
2. 115 – 29
3. 27929 – 10034
4. 4734 + 2645
5. 138 + 479
6. 90348 + 2610
7. 105 - 47
8. 779 -304
10. 1 + 23
12. 2 + 19
14. 20 + 71.
16. 9 + 37
17. 20 + 10
18. 167 – 73
19. 1 + 72
20. 25695 + 3445
21. 70644 – 21249
22. 21 + 64
24. 1300 + 816
25. 110 – 49
26. 1207 – 354
27. 1 + 16
29. 54 + 210
31. 1 + 15
33. 50 + 38
34. 5 + 9

PUJYA NIRUMA'S 50 GLORIOUS YEARS OF GNAN

पूज्य नीरू माँ के 50 GLOYRIOUS YEARS OF GYAN के दिन डान्स, शोभायात्रा और नाटक जैसे कार्यक्रम भव्यातिभव्य रूप से मनाया गया।

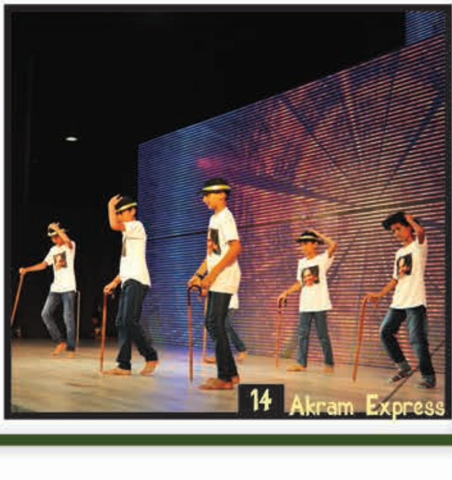

वैताढ्य पर्वत पर विद्याधरों के बड़े-बड़े नगर, सुख-समृद्धि और सौंदर्य से भरपूर थे। उस पर्वत के राजा चक्रायुद्ध की पुत्री प्रभंजना अपने मनपसंद पति की खोज़ में आर्य देश में आई थी। उनके साथ एक हज़ार विद्याधर कन्याएँ थीं। राजा चक्रायुद्ध के मंत्री, सेनापति और छोटी सी रक्षक सेना उसके साथ थी।

प्रभंजना दिखने में बहुत ही सुंदर थीं। उनका काफिला एक वनप्रदेश से निकल रहा था।

उधर सामने से एक विशाल श्वेतवस्त्रधारी श्रमणीवृंद (साध्वियों की टोली) आ रहा था। मध्यम गति से आती हुई टोली जैसे ही प्रभंजना के पास पहुँची तो उसे देखकर प्रभंजना तुरंत ही रथ से नीचे उतर गई। पीछे आ रहा काफिला रुक गया। प्रभंजना की खास सहेलियाँ भी रथ से नीचे उतरकर प्रभंजना के पास आकर खड़ी हो गई।

प्रभंजना ने दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर वंदना की।

साध्वी ने प्रश्न किया, "राजकुमारी, इतने बड़े समूह के साथ, इतने हर्षपूर्वक, किस काम से और कहाँ जाने का प्रयाण किया है?"

प्रभंजना ने नम्रता और विनय के साथ कहा, "हे पूज्या, मैं विद्याधर राजकुमारी प्रभंजना हूँ। वैताढ्य पर्वत पर मेरे पिता ने मेरे लिए स्वयंवर रचा था लेकिन मुझे मेरे योग्य कोई वर पसंद नहीं आया, इसलिए इस आर्यखंड में योग्य वर को पसंद करने के लिए निकली हूँ।"

सुप्रतिष्ठिता साध्वी दो पल मौन रहकर प्रभंजना की आँखों में आँखें डालकर बोली, "हे पुण्यशालिनी, जिनेश्वरों ने भोग सुखों को दुःखरूप कहा है। भोगों का परिणाम रोग हैं। विषय सुख हलाहल विष के समान हैं, उन सुखों को तुम्हारे जैसी बुद्धिशाली राजकुमारी अमृत के समान मानती है? कुमारी, इन विषयी सुखों के भोग से राग-द्वेष बढ़ते हैं और उनसे भवभ्रमण बढ़ जाता है।"

इतना कहकर साध्वी रुके।

प्रभंजना ने कहाः "हे उपकारी, आपने कहा वह बिल्कुल सत्य है। मैं समझती हूँ कि विषयी सुख सच्चे नहीं हैं। लेकिन इन सुख-भोगों की कुटेव से कैसे छूटे? जो जीव इन विषयी सुखों का त्याग करते हैं वे धन्यवाद के पात्र हैं।"

साध्वी प्रभंजना की बात शांति से सुन रहे थे। दो पल के मौन के बाद, प्रभंजना ने अपनी बात आगे बढ़ाई, "हे पूज्या, हमें भी भोग सुखों का त्याग करना ही चाहिए। लेकिन वह कैसे करें? प्रभंजना की आँखों में थोड़ा विषाद आ गया।"

यह देखकर उनके पास खड़ी हुई सहेली बोली, "राजकुमारी, तुम्हारी बात सही है, लेकिन अभी तो हम जिस प्रयोजन से निकले हैं, उस प्रयोजन को पूरा करना है। फिर... उत्रावस्था में परमपद प्राप्त करने के लिए धर्म पुरुषार्थ करना! "

प्रभंजना बोलीं, "मेरी सखी, यह तो कायरता की बात है। पहले धर्म पुरुषार्थ ही करना चाहिए।"

साध्वी सुप्रतिष्ठिता मधुर-गंभीर स्वर में बोले, "राजकुमारी, सचमुच यह संसार क्लेशमय और दुःखमय है, ऐसे संसार को हितकारी-सुखकारी मानना वह एक प्रकार का मिथ्या आवेश है। तुम्हारी सखी ने कहा कि "पहले संसार सुख भोग लो, फिर धर्म पुरुषार्थ करना..." यह बात तो ऐसी है कि "पहले शरीर को गंदा कर लो, फिर उसे धो डालो। यह शिष्ट पुरुषों का आचार नहीं है।"

तुम पति की खोज़ करोगी। उसके साथ शादी करोगी... लेकिन यह संबंध क्या शाश्वत रहेगा? संबंध तो कच्चे धागे जैसे हैं... कभी भी टूट जाएँगे। इसलिए ऐसे क्षणिक संबंध किस काम के? जो मोह का त्याग कर सकता है वही संयम का मार्ग अपना सकता है। वही मनुष्य जीवन सफल करता है।

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर वनखंड, एक तरफ एक हज़ार विद्याधर कन्याओं का काफिला मौन खड़ा है। दूसरी ओर सैकड़ों श्रमणियाँ भूमि पर दंड टिकाकर, भूमि पर दृष्टि स्थिर करके, मन ही मन

ऐतिहासिक गौरव गाथा

परमात्मा स्मरण करते हुए खड़ी हैं।

बीच में साध्वी सुप्रतिष्ठिता और राजकुमारी प्रभंजना खड़े हैं।

साध्वी के ज्ञानाभूत वचनों ने प्रभंजना के हृदय में हलचल मचा दी। वे स्थिर खड़ी थीं। साध्वी के तत्त्वसभर वचनों ने उन्हें आत्मनिरीक्षण करने के लिए प्रेरित किया। साध्वी जी मौन रहे। प्रभंजना भी मौन के महासागर में तैरने लगी थी। शरीर और वाणी स्थिर हो गए। उनका आत्मचिंतन शुरू हो गया।

“यह साध्वीजी ने सही कहा है। अनादि से संसार में परिभ्रमण करते हुए जीव ने अन्य जीवों के साथ, सभी प्रकार के संबंध किए हैं। माता का, पिता का, भाई का, बहन का, पत्नी का, पुत्री का... यह सब संसार का स्वभाव है।” दुश्मन मरकर फिर दोस्त बनता है, दोस्त मरकर फिर शत्रु भी बनता है...... यही सब संसार का स्वभाव है।

सचमुच आत्मा ही प्राप्त करने जैसा है। आत्मा का अनुभव ही मानव जीवन की सार्थकता है। वैसे तो हमारा आत्मा सिद्ध समान ही है! मैं इस शरीर से अलग ही हूँ। तो उस अनुभव में देर कितनी?

सोचते-सोचते प्रभंजना ने धर्मध्यान से शुक्लध्यान में प्रवेश किया और उन्हें केवलज्ञान प्रकट हो गया।

स्वर्ग से देव उतर आए। प्रभंजना को साध्वी-वेश दिया। स्वर्णकमल की रचना की। भूमि सुगंधित जल से सुवासित कर दी। पुष्पों की बरसात हुई। साध्वी प्रभंजना स्वर्णकमल पर विराजित हुई।

साध्वी सुप्रतिष्ठता ने और सभी साध्वियों ने केवलज्ञानी की वंदना की। गद्‌गद् स्वर से स्तवना की।

प्रभंजना के साथ आई हुई एक हज़ार विद्याधर कन्याओं ने दीक्षा ली। केवलज्ञानी महासाध्वी प्रभंजना ने वर्षों तक इस पृथ्वी पर विचरण करके विश्व पर उपकार किया। आयुष्यकर्म पूर्ण होने पर अघाती कर्मों का नाश हुआ और साध्वी प्रभंजना मोक्ष में गए।

मीठी यादें

मुंबई में सत्संग था। सत्संग समाप्त होने के बाद सभी ब्रह्मचारी भाई नवीन आशा (नीरू माँ का घर) गए। एक भाई सत्संग स्थल पर ही काम पूरा करने के लिए रुके थे।

नवीन आशा जाकर सभी भाईयों ने जल्दी से खाना खा लिया। बहुत भूख लगने की वजह से खाना सब खत्म कर दिया। नीरू माँ के साथ बातें करते-करते खाना खाते गए और किसी को ध्यान ही नहीं रहा कि अभी एक भाई खाना खाने आने वाले हैं।

पीछे से वह भाई आए। नीरू माँ ने उनसे पूछा, "खाना बाकी है?"

उन्होंने "हाँ" कहा, "सब काम पूरा करके आया।"

खाना कुछ बचा नहीं था।

यह देखकर नीरू माँ ने उन भाईयों को डाँटा कि, "उसका खाना बाकी है फिर भी आप सब ने सारा खाना खा लिया। उसके लिए कुछ नहीं रखा?"

इस तरह एक के बाद एक सभी भाईयों को डाँटा।

एक भाई ने कहा, "नीरू माँ, मुझे तो पता ही नहीं था कि वह यहाँ आने वाले हैं।"

दूसरे ने कहा, "नीरू माँ, मुझे तो यही पता नहीं था कि वह आया भी है।"

इस तरह सभी लोग अपना बचाव करने लगे।

फिर एक भाई की बारी आई, नीरू माँ जब उन्हें डाँट रहे थे तब वह एक भी शब्द नहीं बोले, उसने कहा, "हाँ, नीरू माँ, गलती हो गई।"

यह सुनकर नीरू माँ ने सभी भाईयों को डाँटा, "आप सभी को पता भी है कि आपने अपना प्रोटेक्शन किया और इसे देखो। इसने तुरंत अपनी भूल स्वीकार कर ली।"

नीरू माँ ने उस भाई की ज़बरदस्त तारीफ करते हुए कहा, "इस लड़के को देखो। उसे भी सच में पता नहीं था कि वह भाई यहाँ आने वाला हैं। फिर भी नीरू माँ ने कहा और उसने सुन लिया। ज़रा भी रक्षण नहीं किया। यह बहुत बड़ी बात है।"

तब सभी भाईयों को लगा कि नीरू माँ को सब कुछ कैसे पता चल जाता है। और हम गिर न जाएँ इसलिए हक से डाँटती हैं!

नीरू माँ का यह डाँटना भाईयों को बहुत स्पर्श कर गया और उस दिन से सभी ने तय किया कि वे कभी अपनी गलतियों का रक्षण नहीं करेंगे।

धन्य हैं ज्ञानी के तरीके!
धन्य ज्ञानी....धन्य ज्ञानी...

जीवंत उदाहरण

दक्षिण भारत के संत तिरुवल्लुवर प्रखर विद्वान थे। उनके द्वारा रचित "तिरुकुरुल" नामक ग्रंथ "तामिलवेद" के रूप में पहचाना जाता है। इस ग्रंथ का अनुवाद जर्मन, लेटिन, अंग्रेजी, आदि अनेक भाषाओं में हुआ है।

संत तिरुवल्लुवर का जन्म चेन्नई के माल्यापुर गाँव के एक कपड़े बुनने वाले के यहाँ हुआ था। जन्म कपड़े बुनने वाले के वहाँ होने की वजह से, वे गुजारा चलाने के लिए कपड़ा बनाने का व्यवसाय करते थे। उनकी पत्नी, वासुकी सूत कातती और तिरुवल्लुवर उसे रंगकर कपड़ा बुनते थे। इस तरह वे घर संसार चलाते थे। एक बार उन्होंने बहुत ही सुंदर चादर बनाई और उसे बेचने बाज़ार में गए।

एक अमीर सेठ के उद्यमी लड़के को, संत का मज़ाक बनाकर, उनके धीरज की परीक्षा लेने का मन हुआ। उसने संत से चादर की कीमत पूछी।

संत ने कहा, "दो रुपए।"

लड़के ने चादर हाथ में ली और उसे फाड़कर उसके दो टुकड़े कर दिए।

"इनमें से एक ही टुकड़ा लेना हो तो क्या कीमत है?" लड़के ने अकड़कर पूछा।

ज़रा सा भी विचलित हुए बिना, संत ने शांति से जवाब दिया, "एक टुकड़े का भाव एक रुपया है।"

लड़के ने चादर और फाड़ दी और कीमत पूछी। संत ने फिर विचलित हुए बिना कीमत बता दी। इस तरह लड़का चादर फाड़ता गया और संत कीमत कम करते गए। अंत में लड़के ने चादर के चींथड़े कर दिए और फिर कीमत पूछी।

संत ने कहा, "अब इस चादर की कोई कीमत नहीं रही।"

लड़के ने संत का मज़ाक उड़ाया और उन्हें दो रुपए देने लगा।

संत ने अत्यंत विनम्रता से पैसे लेने से मना कर दिया और कहा, "जो चीज़ आपको किसी भी काम में नहीं आने वाली, उसके पैसे लेकर मैं क्या करूँगा? मेरे भाई, यह कपड़ा कैसे तैयार हुआ है उसका आपको पता है? रात-दिन किसान ने मेहनत करके कपास उगाया होगा। उसके बाद, उसे काता गया, रंगा और बुना गया। कई दिनों की मेहनत के बाद, यह चादर तैयार हुई थी। भाई उस श्रम की सफलता तो, तभी मानी जाएगी जब वह कपड़ा किसी के पहनने के काम आए तो ही होगी न?"

इतना परेशान करने के बाद भी संत की ग़ज़ब की नम्रता देखकर, उस लड़के की अकड़ पिघल गई। संत की नम्रता के सामने, उसकी अकड़ झुक गई। उसके बाद, वह संत तिरुवल्लुवर का सच्चे अर्थ में शिष्य बन गया।

मित्रों, जो नम्र होता है वह सामने वाले की अकड़ को देखकर कभी भी गुस्सा नहीं करेगा। तो चलिए, हम भी तय करे कि जब अपने साथ कोई आड़ाई करे तब हमें उनके दोष देखने के बजाय उस तरह का दोष हम में कहाँ है वह देखे और नम्र हो जाए।

Akram Express
August 2018
Year : 6, Issue : 5
Conti. Issue No.: 65

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

और अंत में...

एक बार जब तूफान आया था तब आम का पेड़ बच गया जबकि ताड़ का पेड

जड़ सहित ज़मीन से उखड़ गया। ठूँठ का कुछ हिस्सा बच गया था।

जब तूफान चला गया तब ताड़ के ठूँठ ने आम के पेड़ से पूछा, "तूफान की विनाशी ताकत के सामने आप कैसे टिक पाए।"

आम के पेड़ ने कहा कि "तूफान आने पर भी मैं तो झुक कर ही रहता हूँ। मैं झुका हुआ था इसलिए तूफान मेरे ऊपर से चला गया। तुम तूफान के सामने अकड़कर खड़े रहे इसलिए तुम गिर गए।"

नम्र व्यक्ति सभी को प्रिय लगते हैं।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025